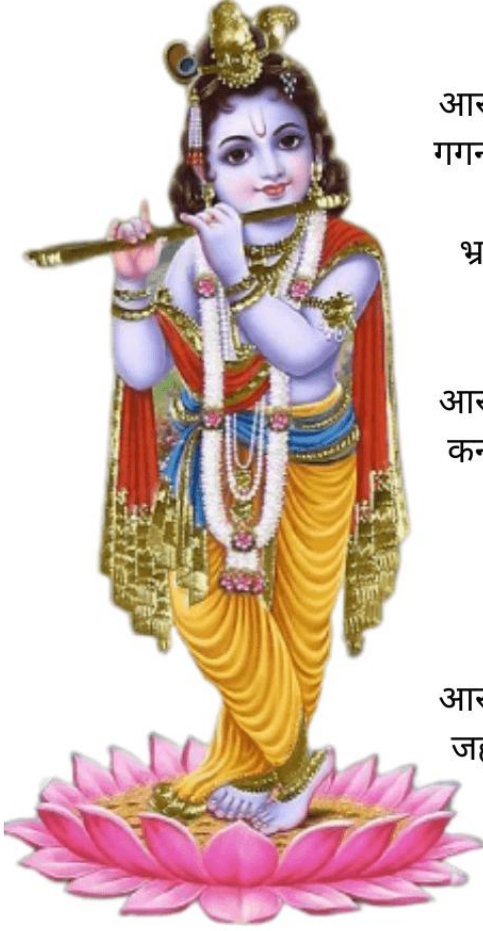


आरती कुंजबिहारी की



आरती कुंजबिहारी की । श्री गिरधर कृष्णमुरारी की ॥

गले में बैजंतीमाला, बजावै मुरलि मधुर बाला ।

श्रवन में कुण्डल झलकाला,

नंदके आनंद नँदलाला ॥

नन्द के आनंद , मोहन बृजचंद , परमानंद,

राधिका रमण बिहारी की

श्री गिरधर कृष्णमुरारी की ॥

आरती कुंजबिहारी की । श्री गिरधर कृष्णमुरारी की ॥

गगन सम अंग कांति काली, राधिका चमक रही आली,

लतनमें ठाढ़े बनमाली ,

भ्रमन-सी अलक, कस्तूरी-तिलक, चंद्र-ली झलक,

ललित छबि स्यामा प्यारी की ।

श्री गिरधर कृष्णमुरारी की ॥

आरती कुंजबिहारी की । श्री गिरधर कृष्णमुरारी की ॥

कनकमय मोर-मुकुठ बिलसै, देवता दरसनको तरसै,

गगन सों सुमन रासि बरसै,

बजे मुरचंग, मधुर मिरदंग, ग्वालनी संग,

अतुल रति गोपकुमारीकी ।

श्री गिरधर कृष्णमुरारी की ॥

आरती कुंजबिहारी की । श्री गिरधर कृष्णमुरारी की ॥

जहाँ ते प्रगट भई गंगा, कलुष कलि हारिणि श्रीगंगा,

स्मरन ते होत मोह-भंगा,

बसी सिव सीस , जटाके बीच, हरै अघ कीच,

चरन छबि श्रीबनवारीकी ।

श्री गिरधर कृष्णमुरारी की ॥

आरती कुंजबिहारी की । श्री गिरधर कृष्णमुरारी की ॥

चमकती उज्ज्वल तट रेनु, बज रही बृन्दाबन बेनु,

चहूँदिसि गोपि ग्वाल धेनु,

हँसत मृदु मंद, चाँदनी चंद, कटत भव-फंद,

टेर सुनु दीन भिखारीकी ।

श्री गिरधर कृष्णमुरारी की ॥

आरती कुंजबिहारी की । श्री गिरधर कृष्णमुरारी की ॥

आरती कुंजबिहारी की । श्री गिरधर कृष्णमुरारी की ॥

PrabhuPuja